[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3586

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों का समाज पर प्रभाव – "होली समता का उत्सव"

प्रो. किशोर एरंडे,
सहायक प्राध्यापक,
राजनीतिविज्ञान, शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यानय, किला भवन, इन्दौर

होली भले ही साल–दर–साल आती रहे, पर उसके इंतजार की बेकरारी दिलों में कभी कम नहीं होती। रंगों में सराबोर हो उठने का यह त्यौहार प्राचीन काल से ही हमारा गौरव पर्व है। होली की रंगत ही कुछ ऐसी है कि इसने पंथों, संप्रदायों के बाड़ भी प्रेम की बौछार करते हुए बड़े खिलंदड़पन के साथ तोड़े है। यायावर अलबरूनी पर होली के रंग ऐसे चढ़े कि उसने अपनी ऐतिहासिक यात्रा के संस्मरण में होलिकोत्सव का खास जिक्र किया। मुस्लिम कवियों का होली वर्णन दिलचस्प है। सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो व नजीर अकबराबादी ने होली के नाम उम्दा रचनाएँ समर्पित की है। मुगल बादशाहों ने भी होली की खूब धूम मचाई है। अकबर के महल में सोने चांदी के बड़े–बड़े होदों में केवड़े और केसर के साथ टेसू का रंग घोला जाता था, जहांगीर के 'महफिल–ए–होली' में आम जनता बादशाह पर भी रंग उड़ेल सकती थी। शाहजहां की होली, ईद–ए–गुलाबी और "आब–ए–पाशी" के नाम से मशहूर थी। उत्सवप्रिय समाजों में वर्ष का आरंभ उत्साहपूर्वक मनाने की प्रथा है। 'होली' केवल 'रंगों' का उत्सव नहीं है। वह सबसे पहले एक सामाजिक अनुष्ठान है। दीवाली अगर हमारे लिए समृद्धि का उत्सव है तो होली समता का उत्सव है।

सामाजिक जीवन के प्रवाह में आरोह–अवरोह, ऊँच–नीच, विषाद उत्साह के क्रम आते ही रहते हैं। सामाजिक जीवन को गतिवान बनाए रखने के लिए यह आवष्यक होता है कि वर्षभर की इकट्ठा हुई मलिनता को दूर कर दिया जाए, क्योंकि तब ही नए वर्ष में नए संकल्प के साथ प्रविष्ट हुआ जा सकता है। इसलिए वर्ष के अंतिम दिन के लिए यह विधान हुआ कि होली खेलने के लिए सब लोग घर से निकले। सबके घर जाना है और ऊँच–नीच, ईर्ष्या, द्वेष सबको किनारे रखकर सबकों गले लगाना है, उसे रंग में भिगोना है।

'होली' के रस के उपादन रंग और संगीत है। प्राचीन काल में टेसू के फूलों के नैसर्गिक रंग से आप्लावित जल ही दूसरों को रंग से भिगोने के लिए उपयोग में लाते थे। अब तो रासायनिक रंगों की भरमार हो गई है। होली जैसे उत्सव के विधि विधान को जिस सजगता से बचाकर रखना चाहिए, वह बुद्धि जैसे खो गई है। होरी गाने वाले लोग भी दुर्लभ होते जा रहे हैं। होली की सामाजिकता भी पीछे छूटती जा रही है। इन सबके बिना न होली रंगोत्सव रहेगी न समता का उत्सव का शहरों में मिलने–जुलने और आपस में बातचीत करने का चलन पहले से घटा है। इतना ही नहीं रिश्तों की गरमाहट और इज्जत–अहसास में हमारे समाज में काफी कमी आई है। औपचारिकता निभाने वाली बातें ज्यादा हो गई हैं। अगर आप मिलेंगे–जुलेंग नहीं, एक–दूसरे के सुख–दुख को साझा नहीं करेंगे तो लगाव कैसे पैदा होगा? 'रंगों' का त्यौहार वहीं भाईचारा, प्रेम, सौहार्द्र, आपसी लगाव पैदा करने और उसे बढ़ाने का एक मौका देता है। इस मौके का हमें और हमारे समाज के लोगों को पूरा उपयोग करना चाहिए, ताकि समाज में जो अविश्वास और समझदारी की कमी आई है, वह दूर हो सके।

चेतन्य महाप्रभु ने जब प्रथम बार दोलयात्रा उत्सव चालू किया तो उसके पीछे मनोविज्ञान यही था कि अपने मन के रंग के मन का परम पुरूष के रंग से मिलाएं। उसके पीछे का मूल रहस्य यही है कि श्रीकृष्ण का मन जिस तरह से तरंगथित हो रहा है, उस तरह से हमारा मन भी तरंगथित हो। शांतिनिकेतन में भी रंगोत्सव दोलत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दोल पर्व का उत्सव पुरूष और प्रियतम है – वसंत और चिरनायिका है प्रकृति नहीं। इन दोनों का प्रत्यक्ष अभिसार का आनंद दोल उत्सव है। यह आनंद राग ही तन–मन वसन को 'कुसुम राग' से रंग जाता है।

कितने युग बीत गए लेकिन होली की प्रकृति नहीं बदली। रंगों के स्वरूप बदल गए हों लेकिन रंगों में डूब जाना नहीं बदला। होली बदलने के लिए नहीं है। हमें उसके स्वरूप को नहीं बदलने देना है क्योंकि उस स्वरूप से हमारी मनुष्य होने की पहचान बनती है।

संदर्भ सूची –

1 कादंबीनी निबंध नवनीत – डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
2 भारतीय चित्रकला का इतिहास – अविनाश बहादूर वर्मा
3 कला निबंध – डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल
4 India Art – George law rance
5 कला और साहित्य – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल
6 भारतीय चित्रकला – रामकृष्ण दास
7 आधुनिक चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास – गोपाल मधुकर चतुर्वेदी
8 रूपांकन – गिर्राज किशोर अग्रवाल
9 विश्व की चित्रकला – चिरंजलाल इवा